मीडिया का प्रभाव असीमित नहीं है

मध्यप्रदेश के गृह मंत्री उमाशंकर गुप्ता ने इंदौर में आयोजित सार्क देशों के भाषायी पत्रकारिता महोत्सव के समापन में कहा कि समाज को बुराइयों तथा विकारों से मुक्त करने के लिए मीडिया को आगे आना चाहिये। हालांकि उन्होंने मीडिया के साथ समाजसेवी तथा संतों को भी ऐसा करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि सिर्फ कानून या सख्त कानून बनाने से बेहतर और मूल्य धारित समाज रचना नहीं हो सकेगी। इसके लिए सबको मिलकर काम करना होगा। ऐसा कहने वाले श्री गुप्ता अकेले नहीं है। मीडिया से इस तरह का सहयोग राजनीति, प्रशासन, कानून, समाज आदि सभी क्षेत्रों के जिम्मेदार लोग चाहते हैं। नागरिक भी मीडिया से ऐसी ही अपेक्षा करते हैं। संत और साहित्य के लोग भी मीडिया से ऐसा आग्रह प्राय: करते हैं। गरज यह कि समाज का हर वर्ग और हर जिम्मेदार व्यक्ति मीडिया से इस तरह के सहयोग के लिए बार-बार कहते हैं।

ऐसा पहली बार नहीं कहा गया है। समाज के बिखराव और मूल्यहीन होने की स्थिति जैसे-जैसे बढ़ती गई है उसी के साथ-साथ ऐसा दिखाई देने लगा कि कानून-व्यवस्था और सामाजिक मूल्य आदि में क्षरण बढ़ता जा रहा है। हम सब जिन मूल्यों और संबंधों की बातें करते हैं और उनको आदर्श मानकर उनको बने रहने की चाहत करते हैं, वे प्राय: उस समय के हैं जब भारत में और दुनिया में भी कृषि प्रधान अर्थ एवं समाज व्यवस्था थी। पारिवारिक संबंध और समाज के मूल्य उस समय उन मूल्यों से संचालित होते थे जो मानवीय संवेदना से जुड़े हुए थे। धर्म, अध्यात्म आदि से समाज और लोग अनुप्राणित थे और उनके प्रधान या प्रमुख लोगों के निर्देश को मान लेते थे। लोगों के व्यवहार, संबंध और मूल्य इन्हीं से संचालित और निर्देशित थे। तब बाजार प्रधान नहीं था। उपभोग भी आज की मात्रा में नहीं था। लोग आपस में जरूरतों के अपने संसाधनों को बांटकर सहयोग करते थे। लोग समाज के बारे में और गतिविधियों के बारे में इतना नहीं जानते थे जितना अब जान रहे हैं। उस समय का समाज आज की तरह सूचना केन्द्रित नहीं था और न ऐसे साधन और माध्यम ही थे।

मध्य यूरोप और अन्य यूरोपीय देशों में हुए औद्योगीकरण का प्रभाव ब्रिटेन के माध्यम से भारत पर भी पड़ा। यहाँ शासन भी उनका ही था। कारखाने यहाँ भी खुलने लगे और तब भारत में भी बाजार विकसित होने लगा। लोगों का रहनसहन बदलने लगा और जीवन के ध्येय और मूल्यों में भी परिवर्तन प्रारंभ हुआ। यह सब धीमा था और उस समय के उन लोगों को प्रभावित कर रहा था जो सत्ता और प्रशासन के करीब थे और अमीर थे। उच्च वर्ग और सत्ता-प्रशासन के करीब के वर्ग में आ रहा यह

परिवर्तन नीचे की ओर प्रवाहित हो रहा था और शिक्षण, सेवायें तथा व्यापार इसे पोषित और पल्लवित कर रहे थे। लोगों के व्यवहारों में परिवर्तन उनके पहनावे, रीति-रिवाजों और जीवन-मूल्यों के सहारे हो रहा था। समाज क्रमशः सूचना केन्द्रित हो रहा था और ये सूचनायें सभी वर्गों में एक साथ एक जैसी उपलब्ध नहीं हो रहीं थी। सूचना के साधन और माध्यम भी विकसित हो रहे थे। समाचारपत्र, पत्रिकायें और बाद में रेडियो समाज में विचार विनिमय और जानकारी के माध्यम बन रहे थे। इसी सब का विकसित रूप आज का वर्तमान समाज है।

इस सब में जीवन मूल्यों का स्वीकार करना और तदनुकूल व्यवहार करना केवल सूचना के साधनों और माध्यमों के कारण नहीं था। वे केवल जानकारी देते थे, तब भी और अब भी। सूचना के साधनों और माध्यमों के कारण न तो स्वराज्य का आंदोलन पैदा हुआ और न ही लोगों की भागीदारी का कारण वे माध्यम ही रहे। हाँ, विचार के फैलाव और प्रेरणा के कार्य का सहायक यह सब रहा है। कर्मवीर के माध्यम से सागर के पास पशुवध का कारखाना बंद नहीं हुआ। हाँ, उसने लोगों को विचार करने और लोगों को उसके विरोध में सक्रिय होने के लिए उत्प्रेरित किया था। कर्मवीर के साथ ही उस कारखाने के विरोध में तैयार हुआ आंदोलन भी उसे बंद करने के लिए सहायक रहा है। कहने का तात्पर्य यह है कि कोई भी सूचना का माध्यम जानकारी देने और उसे फैलाने का काम ही करता है। उसके कारण परिवर्तन नहीं होता। उस सूचना, जानकारी या विचार से मत बनाने या संशोधित करने में मदद जरूर मिलती है। यह भी तब अधिक होता है जब वह जानकारी या विचार बार-बार दोहराया जाता है और लोगों के सामने बना रहता है। यह सचमुच अध्ययन का विषय है कि किसी भी समाचारपत्र या माध्यम स्वरूप ने भ्रष्टाचार की पैरवी नहीं की। उसके बारे में खुलासे ही किये है। यह भी बताया है कि उसके कारण समाज के विकास में बाधा हो रही है। फिर भी भ्रष्टाचार लगातार बढ़ा है और आंदोलनों के बाद भी बढ़ता ही जा रहा है। हिंसा, व्यभिचार, यौन विकृतियाँ आदि सभी के विकास का कारण क्या है, इसका बहुत गंभीरता से अध्ययन किया जाना चाहिये। यह कहा गया कि परिचित और आत्मीय रिश्तों के लोग इस तरह के यौन अपराधों में शामिल पाये गये हैं तो यह तो कहा ही जा सकता है कि इस तरह की पैरवी जन माध्यमों से नहीं की गई है। पर यह सब हो रहा है और फैल भी रहा है।

यह भी जानना-समझना चाहिये कि जिन मूल्यों तथा व्यवहारों की हम चाहना करते हैं और जिन मूल्य और व्यवहारों को हम जाने-अनजाने अपनाते हैं वे क्या एक जैसे हैं। स्पर्धा, वैभव, उपभोग, ऐश्वर्य, वर्चस्व आदि मूल्यों और व्यवहारों की परिणति और उनकी संगति के परिणाम क्या होंगे? वे क्या सहयोग, करुणा, दया, ममता, बंधुत्व, प्रेम, शांति आदि के सहयोगी होंगे या उन मूल्यों के रहते इन मूल्यों की कामना करना केवल स्वांग ही है। मजे की बात यह है कि जानकारी और

सूचना के माध्यम प्रेम, शांति आदि की बात करते हैं और व्यवहार में स्पर्धा मौजूद होती है। क्या इनकी संगति से वह हो सकता है जो हम सार्वजनिक रूप से कहते हैं और अपनी एकांतिक स्थिति में उसका कोई मूल्य नहीं समझते हैं। एक बात और। वे तमाम लोग जो स्वतंत्रता, स्वच्छंदता और व्यक्ति के मनोरोग के पक्षधर हैं और जो स्त्री-पुरूष संबंधों को अपनी निजी आजादी के रूप में मानने के हिमायती हैं, वे स्वयं देखें कि उनके अपने इन विचारों से इस मामले में अव्यवस्थायें और मूल्य तथा व्यवहार कितने प्रभावित हुए हैं । दामिनी या उस तरह के प्रसंग अनायास या किसी वर्ग या व्यक्ति विशेष के व्यवहार हैं या उन मूल्य और व्यवहारों के परिणाम जो हमने अपनी निजी आजादियों या मनोरोगों अथवा व्यसन-उत्तेजन के साथ विकसित किये हैं।

यह सब कहने का आशय यह है कि यदि हम इन विकारों और बुराइयों को सचमुच समाप्त करना चाहते हैं तो हमें उन उपायों का सहारा लेना ही होगा जो लोगों का व्यवहार में परिवर्तन नहीं रूपांतरण और आभ्यंतर परिवर्तन करने में समर्थ हैं। लोगों को अपने दृष्टिकोण के साथ समष्टि के दृष्टिकोण को जोड़ना होगा। बहुजन सुखाय तब प्रचार वाक्य नहीं होगा, आत्मा में बसा व्यवहार होगा। साथ-साथ चलें, काम करें, खायें और आनंद करें का भाव हमारे व्यवहारों का आधार होगा। ऐसा करते हुए वर्चस्व और भाईचारा एक साथ नहीं चलेंगे और न ही स्पर्धा और सहयोग को एक साथ चलाने की बाध्यता होगी। तब जो मूल्य हमारे अपने जीवन और व्यवहार में आचरणगत होंगे। वे न तो व्यसन की तरफ ले जायेंगे और न ही भोगों को जीवन वैभव मानेंगे। मीडिया इस सबमें जो हो रहा होगा, या इसके लिए जो किया जा रहा होगा, उसकी जानकारी, विचार और प्रेरणा का काम कर सकेगा और उसे करना भा, उसे ध्येय में शामिल करना होगा।

000